माध्यमिक स्तर पर भारतीय संस्कृति में निहित विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन

A Study of Scientific Facts Inculcated in Indian Culture at Secondary Level

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

को

पी–एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधार्थी :

सुभाष चन्द्र सैनी

शोध छात्र

iase
Deemed
university

शोध निर्देशक :

डॉ. लोकेश शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा)

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सीटीई

गाँधी विद्यामन्दिर,सरदारशहर, जिला–चूरू (राजस्थान) – 331401

2016

<u>शोध – प्रारूप</u>

1.	शोधकर्ता का नाम	:	सुभाष चन्द्र सैनी
2.	अध्ययन का स्थान	:	बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सीटीई, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर
3.	शोध शीर्षक	:	'माध्यमिक स्तर पर भारतीय संस्कृति में निहित विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन। **A Study of Scientific Facts Inculcated in Indian Culture at Secondary Level.**

4. प्रस्तावना : –

संसार में अनेक संस्कृतियों का उदय हुआ और वे अस्त भी हो गई, परन्तु भारतीय संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है। भारतीय संस्कृति वैदिक संस्कृति द्वारा शिक्षा प्रणाली को एक सुनियोजित ढ़ांचे में सुव्यवस्थित किया गया है। जितने भी पुरातन शिक्षा प्रणाली के क्षेत्र के वहां की शैक्षिक स्थिति को एतिहासिक दृष्टि से देखा तो यह ज्ञात होता है कि शिक्षा के प्रथम स्तर से ही वर्तमान वैज्ञानिक शैक्षिक वातावरण को शामिल किया गया है।

महर्षि कणाद् के वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थ तथा नो दृव्यों की चर्चा हुई है द्रव्य पहला पदार्थ है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक, आत्मा और मन नो द्रव्य है। द्रव्य पर आश्रित पदार्थों को गुण कहा गया है। पृथ्वी द्रव्य पर आधारित गन्ध एक गुण ही है। द्रव्य में रहने वाले तथा संयोग वियोग की परवाह न करने वाले तत्वों को कर्म कहा गया है। तत्व से तत्व की पृथकता सूचित करने वाली चीज को विशेष कहा गया है। तथ्य और वस्तु के नित्य सम्बन्ध को समवाय कहा गया है। कल्पित तथा कल्पित श्रेय तथा सम्भावना मूलक तत्वों को अभाव कहा है। इस दर्शन का प्रमाणुवाद वास्वत में महान है।

इसी प्रकार जब भारतीय ऋषि–मुनियों ने अपने ज्ञान के आधार पर सांस्कृति परम्पराओं का निर्माण किया तो उसी समय शिक्षा के क्षेत्र के लिए भी कुछ परम्पराओं का निर्माण किया जिनको वैदिक शिक्षा के द्वारा समझा जा सकता है। भारत जो विकाशील देश की श्रेणी में आता है वर्तमान में सांस्कृतिक रूप से संयोजन की अवस्था में है। यहां पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति का मेल देखा जा सकता है। यह प्रभाव सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक सभी क्षेत्रों में निहित है। भारतीय संस्कृति के संस्कृत साहित्य में रत्नपरीक्षा, वास्तु विद्या, अश्व शास्त्र, आयुर्वेद, सामुद्रिकशास्त्र तथा नक्षत्र ज्ञान या ज्योतिष आदि को विज्ञान के अन्तर्गत गिना गया है। विज्ञान क्रमबद्ध ज्ञान का नाम है।

ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को वैज्ञानिक तथ्यों को जानना एवं भारतीय संस्कृति में समाहित वैज्ञानिक तथ्यों को जानना आवश्यक है। इसे हम इस प्रकार समझे कि प्रातः काल सूर्योदय के समय सूर्य को जल चढ़ाने से किन वैज्ञानिक तथ्यों को देखा जाये तो इसमें एक तो भारतीय संस्कृति ग्रहों को देवता मानकर सम्मान करती है वहीं दूसरी ओर वैज्ञानिक तत्वों में यह निहित है कि प्रातः कालीन सूर्य की किरने शरीर पर पड़ती है तो विटामिन डी की प्राप्ति होती है और शरीर निरोग रहता है। इसी प्रकार पीपल को देवता मानकर भारतीय महिलाएं उसका सिंचन करती है। इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जाने तो यह कहा जाता है कि पीपल का पेड़ सर्वाधिक ऑक्सीजन (प्राणवायु) का विसर्जन करता है। अर्थात पीपल जिस भारतीय संस्कृति में देवता माना गया है वह जीवन प्रदान करता है।

इसी प्रकार अनेकानेक उदाहरण देखने को मिलते है जहां भारतीय संस्कृति में वैज्ञानिक तथ्य समाहित है। वर्तमान में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी वैज्ञानिकता की और अधिक मुड़े हुए है, इन्हें भारतीय संस्कृति की ओर मोड़ने हेतु वैज्ञानिक तथ्यों को आधार भारतीय संस्कृति ही है। यह अवगत करवाना भी आवश्यक है। प्रस्तुत शोध शीर्षक इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर किया गया है।

अध्ययन का महत्व :–

भारतीय संस्कृति को गौरवमयी बनाने में इसके अद्वितीय ग्रन्थों का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति के इन अद्वितीय ग्रन्थों में निहित वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन करके वर्तमान का समस्याग्रस्त मानव अपनी समस्याओं का कुशलतापूर्वक समाधान कर सकता है। उक्त शोधकार्य का महत्व इसलिए भी अधिक है कि भारतीय संस्कृति में निहित वैज्ञानिक

तथ्यों को व्यक्ति जीवन में उतारकर सन्मार्ग पर चलते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है।

यह विडम्बना ही है कि वैदिक साहित्य मैं आज से कई वर्षों पूर्व ही काल गणना, ग्रहों की स्थिति, ग्रहण, मौसम की भविष्यवाणी की जा चुकी थी। फिर भी वैज्ञानिक इन बातों की पुष्टी करने के लिए ही अधिकतर समय बिताया है। वर्तमान में दूरदर्शन का उपयोग महाभारत में संजय द्वारा बताया गया युद्ध का हाल, अर्जुन द्वारा बताई गई बातों का अभिमन्यु द्वारा गर्भ में ही ग्रहण कर लेना यह सब वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार किया जा चुका है। इस आधार पर प्रस्तुत शोध का महत्व इस दृष्टिकोण से अधिक जान पड़ता है कि भारतीय संस्कृति में निहित तथ्यों को वैज्ञानिक तथ्यों के साथ किस प्रकार से देखा जा सकता है। शोध का महत्व इस बात से भी होगा कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और शिक्षकों को भारतीय संस्कृति में निहित वैज्ञानिक तथ्यों से अवगत करवाया जा सकेगा और भारतीय संस्कृति को पुरातन परम्पराओं की ओर उन्मुख किया जा सकेगा।

अध्ययन का औचित्य :—

अध्ययन को लेकर सामाजिक दृष्टिकोण से यह जानना कि वैज्ञानिक तथ्य किस प्रकार से भारतीय संस्कृति में समाहित है। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति और वैज्ञानिक तथ्यों का आपसी मेल यदि होता है तो माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों, शिक्षकों के जीवन में किस प्रकार का प्रभाव पड़ेगा इसी का औचित्य जान पड़ता है। दूसरी और इस अध्ययन का यह भी औचित्य है कि भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं जिन पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ता दिखाई दे रहा है उनमें वैज्ञानिक तत्वों की क्या भूमिका हो सकती है के बारे में भी अधिक जानने को मिल सकेगा।

वैज्ञानिक अध्यात्म के क्रान्ति दीप हर युग में प्रकाशित हुए हैं। प्रत्येक युग में धरती के पूर्वी एवं पश्चिमी छोर पर मानव एवं ईश्वर से प्रेम करने वाले महामानवों व दैवी विभूतियों ने इन क्रान्ति दीपों को प्रज्ज्वलित किया है। कुछ ने आध्यात्मिक क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रयोग किए हैं, तो कुछ ने वैज्ञानिक प्रयोगों को आध्यात्मिक अन्तर्प्रज्ञा एवं परिष्कृत संवेदना से संवारा है। नवयुग की दहलीज पर, बीसवीं सदी एवं इक्कसवीं सदी की संक्रमण बेला में प्रज्ञावतार युगऋषि परम पूज्य गुरूदेव ने विज्ञान व अध्यात्म की समस्त श्रेष्ठताओं को समन्वित कर इस नए युग को वैज्ञानिक अध्यात्म का क्रान्ति मन्त्र दिया। उन्होंने मानवीय भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए पिछले सभी प्रयासों में अपने तम एवं प्रज्ञा का प्रकाश

उड़ेलकर वैज्ञानिक अध्यात्म का यह अनूठा क्रान्तिदीप प्रज्ज्वलित किया। इसमें अतीत की धरोहर, वर्तमान का प्रयास और भविष्य का प्रकाश है।

यद्यपि भारतीय संस्कृति को लेकर अनेक अनुसंधान हो चुके है लेकिन शैक्षिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों युक्त अनुसंधान आज तक नहीं हुआ है। भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक तथ्यों को व्यवहारिक रूप को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना अनुसंधानकर्ता का प्रमुख ध्येय है।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर पर भारतीय संस्कृति में निहित विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन''

A Study of Scientific Facts Inculcated in Indian Culture at Secondary Level.

5. शब्दों का परिभाषीकरण

1. संस्कृति

संस्कृति शब्द सभ् उपसर्ग के साथ संस्कृत की (डु) कृ (चं) धातु से बनता है, जिसका मूल अर्थ साफ या परिष्कृत करना है। आज की हिन्दी में यह अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' का पर्याय माना जाता है। संस्कृति शब्द का प्रयोग कम–से–कम दो अर्थों में होता है, एक व्यापक और एक संकीर्ण अर्थ में। व्यापक अर्थ में उक्त शब्द का प्रयोग नर–विज्ञान में किया जाता है। उक्त विज्ञान के अनुसार संस्कृति समस्त सीखे हुए व्यवहार अथवा उस व्यवहार का नाम है, जो सामाजिक परम्परा से प्राप्त होता है। इस अर्थ में संस्कृति को सामाजिक प्रथा (कस्टम) का पर्याय भी कहा जाता है। संकीर्ण अर्थ में संस्कृति एक वांछनीय वस्तु मानी जाती है और संस्कृत व्यक्ति एक श्लाध्य व्यक्ति समझा जाता है। इस अर्थ में संस्कृति प्रायः उन गुणों का समुदाय समझी जाती है, जो व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाते है। नर–वैज्ञानियाँ के अनुसार 'संस्कृति' औश्र 'सम्भ्यता' शब्द पर्यायवाची है।

2. वैज्ञानिक

कोई भी व्यक्ति जो ज्ञान प्राप्ति के लिए विधिवत रूप से कार्यरत है हो उसे वैज्ञानिक कहते है। किन्तु एक सीमित परिभाषा के अनुसार वैज्ञानिक विधि का अनुसरण करते हुए किसी क्षेत्र में ज्ञानार्जन करने वाले व्यक्ति को वैज्ञानिक कहते है।

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय संस्कृति में निहित वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन करना।
2. भारतीय संस्कृति में निहित वैज्ञानिक तथ्यों की व्यख्या करना।
3. माध्यमिक स्तर के विज्ञान पाठ्यक्रम में निहित वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन करना।
4. भारतीय संस्कृति में निहित वैज्ञानिक तथ्यों के माध्यमिक स्तर के विज्ञान पाठ्यक्रम में समावेशन की सम्भावनाओं का अध्ययन करना।
5. भारतीय संस्कृति के प्रकाश में माध्यमिक स्तर पर विज्ञान विषय का आदर्श प्रारूप तैयार करना।

6. संदर्भ साहित्य का अध्ययन

1. **चौधरी, राधाकृष्ण (1985) ने** ***"प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास"*** विषय पर स्वतन्त्र अध्ययन किया। इन्होने अपने अध्ययन में रामायण युग की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्थिति का तार्किक एवं बोधगम्य विवेचन किया। उनका अध्ययन उस युग के सांस्कृतिक सम्पन्न नागरिकों का हमारे समक्ष अनुकरणीय उदाहरण है। चौधरी ने अपने अध्ययन में वर्तमान की भ्रष्ट राजनीति का बहिष्कार करते हुए रामायणकालीन उत्कृष्ट शुद्ध राजनीति के अनेक उदाहरण हमारें सामने प्रस्तुत करके प्रायोगिक बल का आह्वान किया।

2. **प. श्रीराम शर्मा (2005) "ब्रह्मविद्या का रहस्योद्घाटन" – सिद्धि के सिद्धान्त** आध्यात्मविद्या में जिन्होंने थोड़ा–बहुत भी प्रवेश किया है, वे जानते है कि साधना से सिद्धियाँ प्राप्त होती है। अष्टसिद्धि और नवनिद्धि प्रसिद्ध है। विभिन्न योगों द्वारा विभिन्न शक्तियों का मिलना प्रकट ही है। इंद्रियों के आकर्षक भोगों को सुख–सुविधा को, ऐशोआराम को छोड़कर कोई व्यक्ति कष्टदायक, कठोर, नीरस, श्रमसाध्य साधना में प्रवृत्त होता है, तो वह ऐसा करने के लिए कम कीमती चीज का त्याग किया जाता है। साधना का कष्ट इसलिए सहन करते है कि जिन सुखों को त्याग किया गया है, उससे अधिक मूल्यवान सुख प्राप्त हो। यदि ऐसा न होता तो कोई भी व्यक्ति–साधना का कष्ट सहने को तैयार न होता ।

3. प. श्रीराम शर्मा (2005) – *''ब्रह्मविद्या कारहस्योद्घाटन''* मानव शक्तियों के दो भाग है– एक स्थूल दूसरा सूक्ष्म अथवा एक दृश्य दूसरा अदृश्य। दृश्य शक्तियाँ स्पष्ट और प्रकट होती है। बलवान मनुष्य का शरीर मोटा–ताजा, हट्टा–कट्टा, गठा हुआ और भारी साफ दिखाई पड़ता है। दिमागी बल खुद तो आंखों से दिखाई नहीं पड़ता, पर उसे पहचाना आसानी से जा सकता है। डॉक्टर, वकील, पंडित, जज, अध्यापक, उपदेशक छिपते नहीं, ये योग्यताएं थोड़ी खोज करने पर प्रकट हो जाती हैं। इसी प्रकार शिल्प, गीत, वाद्य, व्यापार, कला–कौशल आदि की योग्यताएं कार्यों को देखकर या पूछकर जानी जा सकती है। मस्तिष्क सहित शरीर के अंग–प्रत्यंगों की योयताएं स्थूल या दृश्य कही जाती है। ये प्रकट हैं और आसानी से उनका परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

4. प. श्रीराम शर्मा (2010, पुनरावृत्ति सन्) – *''अंतरिक्ष विज्ञान की नवसृजन के संदर्भ में उपादेयता''* अंतरिक्ष विज्ञान, भू–विज्ञान से कम महत्वपूर्ण नहीं है। जल और थल की तरह आकाश पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील मनुष्य यदि चाहे तो अपने पुरूषार्थ में एक कड़ी और जोड़ सकता है कि ग्रहों के सूक्ष्म प्रभाव से पृथ्वी के वातावरण तथा प्राणि परिवार को जो अनुकूलता–प्रतिकूलता सहन करनी पड़ती है उसके सम्बन्ध में उपयुक्त जानकारी प्राप्त करे और तद्नुरूप उपाय खोज निकाले। प्राचीन काल से 'ज्योतिष विज्ञान' के दो पक्ष हैं– ग्रहों की गतिविधियां तथा उनकी सूक्ष्म प्रतिक्रियाओं की जानकारी।

5. प. श्रीराम शर्मा (2011, पुनरावृत्ति सन्) – *''मानवीय मस्तिष्क विलक्षण कम्प्यूटर''* स्मरण शक्ति की विलक्षणता को ही ले, वह कई व्यक्तियों में इतनी अधिक मात्रा में विकसित पाई जाती है कि आश्चर्यचकित कंठाग्र रखने के लिए प्रसिद्ध था। कितनी ही बार उलट–पुलटकर उसकी परीक्षा की गई और वह सदा खरा उतरा। फ्रांस का राजनेता लिआन गैम्वाटा को विक्टर ह्यूगों की रचनाएं बहुंत पसंद थी। उनमें से उसने हजारां संदर्भ के पृष्ठ याद कर रखे थे और उन्हें आवश्यकतानुसार धड़ल्ले के साथ घंटों दुहराता रहता था। इसमें एक शब्द भी आगे पीछे नहीं होता था। पृष्ठ संख्या तक वह सही–सही बताता चलता था।

6. प. श्रीराम शर्मा (2007) – *''विज्ञान का शैतान बनने से रोकें''* कीटनाशक उपायों में अब तक एक ही कारगर उपाय सोचा जा सका है कि विषैला रासायनिक

घोल छिड़ककर जहां भी ये कीड़े हों वहां ही उन्हें मार डाला जाये। डी.डी.टी. प्रभृति औषधियों का प्रयोग इसी दृष्टि से अति उत्साहपूर्वक हुआ है, पर उससे भी कुछ हल निकला नहीं। एक तो इन कीड़ों की बढ़वार इतनी व्यापक होती है कि उन्हें मारने के लिए कीड़ों के लिए लगभग इतने ही मूल्य की दवाएं चाहिए– जितना कि फसल का मूल्य होता है। उन्हें हर कोई न तो खरीद सकता है और न सही प्रयोग जानता है। अवांछनीय मात्रा में असावधानी से उनका प्रयोग किया जाए तो पौधों के नष्ट होने और उनके फल, बीज खाने वालों में विषाक्तता बढ़ जाने का खतरा स्पष्ट रहता है।

7. **प. श्रीराम शर्मा (2006) –** ***''विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वित स्वरूप''*** इस विश्व ब्रह्मांड में दो शक्ति–सताएं आच्छादित हैं। एक जड़ दूसरी चेतन। इन्हीं को प्रकृति और पुरूष भी कहते है। स्थूल और सूक्ष्म भी। इन दोनों का पृथक–पृथक अस्तित्व और महत्व है, पर सुयोग तभी बनता है जब वे एक–दूसरे की सहायक बनकर संयुक्त शक्ति के रूप में विकसित होती और अपने चमत्कार दिखाती है। उदाहरण के लिए शरीर को ही लिया जाए। काया पंचतत्वों द्वारा विनिर्मित है। अंग अवयवां में रक्त–मांस, तंतु–झिल्ली, अस्थि–मज्जा का मिलन–एकीकरण है। इसलिए उनसे इच्छानुरूप काम कराया जा सकता है। शरीर तंत्र की प्रकृति की करामात भी इसे कह सकते है। इतने पर भी वह अपूर्ण है। उसके भीतर एक चेतना काम करती है। उसी का अचेतन भाग श्वास–प्रश्वास, निमेष–उन्मेष, आकुंचन–प्रकुंचन, सुषुप्ति–जागृति आदि की व्यवस्था बनाता रहता है। उसी का दूसरा पक्ष है– सचेतन। जो सोचता, निर्णय करता और इच्छानुरूप कार्य करने का आदेश देकर अनेकानेक क्रिया–कृत्य सम्पन्न करता है।

शोधकर्ता समस्या से सम्बन्धित शोधकार्यों का पुनरावलोकन कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि माध्यमिक स्तर के लिए भारतीय संस्कृति में निहित विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन को सयुंक्त रूप से लेकर किया गया शोधकार्य अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। इसलिए शोधकर्ता में यह जिज्ञासा हुई कि इस समस्या को अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाया जाये। इसलिये शोधकर्ता द्वारा **''भारतीय संस्कृति में निहित विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन''** नामक शीर्षक को अपने शोधकार्य हेतु चयनित किया गया।

7. अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध का विषय शिक्षा–दर्शन है, जिसमें दर्शन व विषय से सम्बन्धित सामग्री पुस्तकों व पत्र–पत्रिकाओं से संकलित की गई है। इस शोध में शोधकर्ता द्वारा केवल वैदिक संस्कृति के आध्यात्मिक एवं धार्मिक क्षेत्र में निहित वैज्ञानिक तथ्यों को चयनित किया जायेगा।

8. शोधविधि

शोध समस्या का चयन करने के बाद शोध विधि का चयन करना महत्वपूर्ण कार्य होता है। शोधविधि अनुकूल न होने पर शोध के सार्थक परिणाम नहीं आते है। दार्शनिक अनुसंधान में प्रायः विवरणात्मक ऐतिहासिक व घटनोत्तर विधियों का ही प्रयोग होता है।

प्रस्तुत शोधकार्य करने हेतु विवरणात्मक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि का अनुसरण करते हुए विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से शोधकार्य को पुस्तकालय में प्राचीन साहित्य शास्त्र, प्राचीन भारतीय शिक्षा से सम्बन्धित मौलिक साहित्य, सम्बन्धित, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं की सहायता से पूरा करने का भरसक प्रयास किया जायेगा।

9. प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अध्याय क्रम

प्रथम अध्याय – अध्ययन की पृष्ठभूमि।

द्वितीय अध्याय – संबधित साहित्य का पुनरावलोकन।

तृतीय अध्याय– भारतीय संस्कृति के विभिन्न तथ्य

चतुर्थ अध्याय – भारतीय संस्कृति में निहित तथ्यों की वैज्ञानिकता।

पंचम अध्याय – माध्यमिक स्तर के विज्ञान पाठ्यक्रम में निहित वैज्ञानिक तथ्य

षष्ठ अध्याय – भारतीय संस्कृति में निहित वैज्ञानिक तथ्यों की माध्यमिक स्तर के विज्ञान पाठ्यक्रम में समावेशन की सम्भावना।

सप्तम अध्याय – भारतीय संस्कृति के प्रकाश में माध्यमिक स्तर पर विज्ञान विषय का आदर्श प्रारूप।

अष्टम अध्याय– कार्ययोजना, शैक्षिक उपयोगिता एवं सुझाव।

10. शोधकार्य में लगने वाला समय

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा, जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है।

क्र.सं.	शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य	अनुमानित समय
1	प्रथम अध्याय	3 माह
2	द्वितीय अध्याय	3 माह
3	तृतीय अध्याय	3 माह
4	चतुर्थ अध्याय	3 माह
5	पंचम अध्याय	3 माह
6	षष्ठ अध्याय	3 माह
7	सप्तम अध्याय	3 माह
8	अष्टम अध्याय	2 माह
9	टंकण एवं बाईडिंग	1 माह
10	कुल अवधि	24 माह

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बोहरा, हरिवल्लभ, (1993), ''कवीन्द्र रवीन्द्र का शैक्षिक चिन्तन'' शिविरा पत्रिका, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा विभाग, बीकानेर, अंक 11–12, पृष्ठ संख्या 545,
2. पाण्डेय, रामदास, (2003), ''उच्च शिक्षा और निजी प्रबन्धन'' विद्या प्रकाशन, मेरठ, अंक 77, पृष्ठ संख्या 13–14,
3. राय, पारसनाथ, (2005), ''अनुसंधान परिचय'' लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशक, आगरा, पृष्ठ संख्या 54–55.
4. योगमणि, निरंजन (1998), ''प्राचीन भारत का साहित्यक एवं सांस्कृतिक इतिहास'', रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृष्ठ संख्या 166
5. शर्मा, पं. श्रीराम, (1998), ''विज्ञान और अध्यात्म : परस्पर पूरक'', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, पृष्ठ संख्या 57

6. शर्मा, पं. श्रीराम, (1998), ''भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व'', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, पृष्ठ संख्या 124
7. शर्मा, पं. श्रीराम, (1998), ''साधना प्रद्धतियों का ज्ञान एवं विज्ञान'', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, पृष्ठ संख्या 73
8. शर्मा, भगवती देवी (2010), ''ऋषि चिन्तन के सानिध्य में'', युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, पृष्ठ संख्या 12–13
9. शर्मा, पं. श्रीराम, (2010), ''अथर्ववेद संहिता'', युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा, मथुरा, भाग–1, पृष्ठ संख्या 73

डॉ. लोकेश शर्मा
शोध निर्देशक

सुभाष चन्द्र सैनी
शोध छात्र